हिंदी पखवाड़ा 2024 के अवसर पर

अपील

'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

14 सितम्बर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भाषा को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा घोषित किया था। 15 अगस्त 1947 के नव प्रभात की सुनहरी वेला में देश ने एक नई करवट ली और नए स्वप्न देखे। उन स्वप्नों में से एक स्वप्न था कि एक दिन पूरे देश में एक ऐसी भाषा होगी जो अपनी होगी और जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक संवाद संभव होगा। आजादी के नायकों को इस बात में तनिक भी संदेह न था कि भारत की संपर्क भाषा बनने का महान दायित्व हिंदी और केवल हिंदी ही उठा सकती है। हिंदी की इस व्यापक संपर्क क्षमता को देखते हुए ही संविधान निर्माताओं ने हिंदी को स्वतंत्र और नए देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

इसके साथ हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा के साथ हमारी संस्कृति भी जुड़ी होती हैं। जिस भाषा में आप चिंतन करते है उसकी प्रतिछाया आपकी संस्कृति में भी परिलक्षित होती है। इसका निहितार्थ है कि भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध है। भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं इसलिए स्मरण रहे कि जब हम अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं तो हम कहीं ना कहीं अपनी संस्कृति को भी सहजते हैं।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारे लिए गौरव की बात है। हम अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करें। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम नोटिंग और मूल पत्राचार हिंदी में ही करें, न कि अंग्रेजी में पत्रों को लिखकर हिंदी में उसका अनुवाद करें। ऐसे में हिंदी केवल अनुवाद की बोझिल भाषा मात्र बन कर रह जाएगी।

बीआईएस का अंतिम लक्ष्य उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना है जिसमें हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बीआईएस द्वारा विभिन्न शिक्षण संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न मानकीकरण प्रोत्साहन कार्यक्रमों जैसे मानक मंथन, क्विज इत्यादि तथा उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रमों में परिचर्चा और संवाद अधिकांश रूप से हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में किया जाता है। जो इस तथ्य को रेखांकित करता है कि बीआईएस राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति सजग है।

अतएव, हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर मैं बीआईएस के सभी कार्मिकों से यह अपील करता हूँ कि आप अपना कामकाज राजभाषा हिंदी में करें और **14 से 28 सितम्बर तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में भी उत्साहपूर्वक भाग लें।**

जय हिंद !

प्रमोद

(प्रमोद कुमार तिवारी)

महानिदेशक